



अटल भूजल योजना हरियाणा



सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग
हरियाणा



THE WORLD BANK

सी.बी एजेंसी – देव ऋषि एजुकेशनल सोसायटी देहरादून

अटल भूजल योजना के तहत ग्राम पंचायतों
में स्थापित जल मापक उपकरण

रेन गेज

रेन गेज एक वर्षा मापक यंत्र है जो मूल रूप से अपने ऊपर गिरने वाले पानी को इकट्ठा करता है, और वर्षा की गहराई में समय के साथ परिवर्तन के आंकड़ों को दर्शाता है जिसे आमतौर पर मि०मी० में मापा जाता है।

- रेन गेज को अटल भूजल योजना के तहत चयनित सभी ग्राम पंचायतों में नोडल एजेंसी सिंचाई एवं जल संशाधन विभाग के सहयोग से स्थापित किया जा रहा है।
- रेन गेज को स्कूल या सरकारी विभागों के छतों में उचित व सुरक्षित स्थान पर स्थापित किया जाता है।
- वर्ष में दो बार रेन गेज की जाँच आवश्यक है।
- वर्षा उपरान्त रेन गेज की रीडिंग लेने हेतु सम्बन्धित स्कूल के शिक्षकों को अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। जिसमें शिक्षकों द्वारा प्राप्त आंकड़ों को रजिस्टर में नियमित रूप से अंकित किया जाता है।

अटल भूजल योजना के तहत स्थापित वर्षा मापक यंत्र रेन गेज मीटर:



विडियो देखें <https://youtu.be/di9fCZjrp7k>

वर्षा का मापन

वर्षा को मापने के लिए, बोतल में पानी को कांच (बीकर) के मापने वाले सिलेंडर में डाला जाएगा जिसे एक समतल सतह पर रखा जाएगा। एकत्रित पानी को फैलने से रोकने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए। इसके बाद आंख को पानी (मेनिस्कस) की घुमावदार सतह के तल पर क्षैतिज लाया जाएगा और इसकी रीडिंग ली जाएगी। यदि पानी की निचली सतह दो भागों के बीच रहती है, तो वर्षा का अनुमान निकटतम 0.1 मिमी होना चाहिए।

यदि बोतल में पानी मापने वाले गिलास (बीकर) की क्षमता से अधिक है, तो गिलास को लगभग सबसे ऊपर के अंशांकन चिह्न तक भर दिया जाएगा और नोट की गई रीडिंग को लिख लिया जाएगा। इसके बाद इस पानी को फेंक दिया जाएगा और उपरोक्त प्रक्रिया तब तक दोहराई जाएगी जब तक कि एकत्र किए गए सभी पानी को अलग-अलग मापा और लिखा नहीं जाता है। कुल वर्षा इन सभी मापों का योग होगी।

गेज में वर्षा जल को प्रतिदिन भारतीय मानक समयानुसार प्रातः 08:30 बजे मापना चाहिए।

यदि अवलोकन के समय बारिश हो रही है, तो त्रुटियों से बचने के लिए सभी कार्यों को यथाशीघ्र पूरा किया जाना चाहिए।

कलेक्टर के रिम को नुकसान से बचाने के लिए, वर्षामापी को संभालते समय निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए:

1. कलेक्टर को धीरे से हटाकर एक हाथ में पकड़ना चाहिए
2. रिसीवर को दूसरे हाथ से बाहर निकालना चाहिए
3. कलेक्टर को बदला जाए
4. वर्षा की माप के बाद, संग्राहक को फिर से हटाकर एक हाथ में पकड़ना चाहिए और रिसीवर को दूसरे हाथ से वर्षामापी में अपनी स्थिति में बहाल करना चाहिए
5. लॉकिंग के लिए कलेक्टर को उसके निर्धारित स्थान पर बदला जाना चाहिए।

भूजल स्तर को मापने के लिए जल स्तर संकेतक का उपयोग किया जाता है। जिसका उपयोग कुएं, पीजोमीटर, ट्यूबवेल आदि में किया जा सकता है।

भूजल स्तर डेटा की उपयोगिता:

ग्राम पंचायत के विभिन्न स्थानों में जल स्तर संकेतकों के माध्यम से उत्पन्न डेटा को विश्लेषण से पहले एक विशिष्ट तरीके से एकत्रित और व्यवस्थित करने की आवश्यकता है, इसकी बहुउद्देश्यीय उपयोगिता है, और कुछ प्रमुख उपयोगों का उल्लेख नीचे किया गया है;

- भूजल स्तर के आंकड़ों को कुओं के प्रकार/गहराई के आधार पर वर्गीकृत किया जाएगा ताकि जलभृत की स्थिति और भूजल निकालने के लिए वर्तमान में टैप किए जा रहे क्षेत्र के बारे में पता चल सके।
- भूजल स्तर डेटा सामान्य भूजल प्रवाह दिशा, पुनर्भरण क्षेत्र और निर्वहन क्षेत्र को समझने के लिए प्रयोग किया जाता है।
- भूजल स्तर और पानी की गुणवत्ता के आंकड़ों के आधार पर, उस क्षेत्र की पहचान की जा सकती है जहां भूजल पीने योग्य नहीं है।

1. ग्राम पंचायत के लिए प्रवाहमापी किस प्रकार उपयोगी है?
2. विभिन्न फसलों के लिए फ्लो मीटर डेटा का उपयोग कर डिस्चार्ज की गणना करने का क्या उपयोग है?

वॉटर लेवल इंडिकेटर (सूचकांक):

- वॉटर लेवल इंडिकेटर एक साधारण हाथ से नियंत्रित करने वाला उपकरण है।
- जिसका उपयोग कुओं का पानी मापने के लिये किया जाता है।
- इंडिकेटर उपकरण के सामान्य प्रकार में एक ग्रेजुएटेड प्लास्टिक / टेफलॉन टेप विंच के साथ और एक स्टील मेटल रॉड होता है।
- मेटल रॉड कुएं में टेप को नीचे लाने में मदद करता है।
- इलेक्ट्रिक साउण्डर में प्लास्टिक टेप के अन्दर इलेक्ट्रिक तार फोल्ड किया जाता है।
- जैसे ही मेटल रॉड पानी की सतह से टच करता है, एक बीप आवाज उत्पन्न होती है, और ग्रेजुएटेड टेप से रीडिंग नोट की जाती है।

वॉटर लेवल इंडिकेटर (सूचकांक) उपकरण :



Video

जल स्तर माप के दौरान निम्नलिखित प्रक्रियाओं का पालन किया जाना चाहिए।

1. कुएं की स्थिति रिकॉर्ड करें (सुरक्षात्मक आवरण, कंक्रीट कॉलर, जगह में ताला आदि)।
2. जांचें कि जल स्तर सूचक टेप में कोई स्पष्ट किंक या क्षति नहीं है।
3. कुएँ के ऊपर की ओर खड़े हो जाओ; नलकूप/बोरवेल को अनलॉक करें।
4. रिसर या केसिंग (यदि मौजूद हो) पर पिछले माप बिंदु चिह्न या निशान की पहचान करें। इस स्थान को फील्ड लॉगबुक या जल स्तर निगरानी प्रपत्र में दर्ज करें।
5. जल स्तर संकेतक चालू करें, संकेतक की श्रव्यता की जांच करें, इलेक्ट्रॉनिक जांच को अच्छी तरह से रिसर में (बढ़ती वृद्धि के साथ) धीरे-धीरे मीटर ध्वनि तक रील करें।
6. टेप को हाथ से पकड़ें, टेप को वापस लें और इसे फिर से धीरे-धीरे कम करें जब तक कि ध्वनि फिर से सुनाई न दे।
7. टेप पर पानी की गहराई की जाँच करें और गहराई को 5 मिमी सटीकता के भीतर नोट करें।
8. धीरे-धीरे जांच को फिर से कम करें और सटीकता के लिए माप दोहराएं। टेप पर गहराई को सही ढंग से पढ़ना सुनिश्चित करें।
9. जमीन की सतह से मापे गए सभी भूजल स्तर को सुनिश्चित करें।
10. भूजल स्तर को मापने के लिए माप बिंदु को ठीक करें।
11. हर बार एक ही माप बिंदु से जल स्तर की गहराई को रिकॉर्ड करें।
12. नलकूप/बोरवेल के आवरण के ऊपर से भूजल स्तर मापने के मामले में, वास्तविक भूजल स्तर को इस प्रकार मापा जा सकता है:

वास्तविक भूजल स्तर (एम) = आवरण के ऊपर से भूजल स्तर (एम) - जमीन की सतह के बाहर आवरण की लंबाई (एम)

वॉटर लेवल इंडिकेटर का उद्देश्य:

- ❖ समय समय पर ग्राम पंचायत स्तर पर जल की निगरानी हेतु वॉटर लेवल इंडिकेटर की आवश्यकता होती है।
- ❖ जिससे जल स्रोतों का उचित एवं व्यवस्थित रूप में उपयोग किया जा सके।
- ❖ जिस कारण उपलब्ध जल संसाधनों का नियोजन व जल सुरक्षा योजना निर्माण के साथ ही वर्ष भर जल आंकड़ों को अपडेट किया जा सके।

वॉटर फ्लो मीटर

- ❖ वॉटर फ्लो मीटर एक ऐसा उपकरण जो पाईप या नाली के माध्यम से चलने वाली गैस, वाष्प या तरल की मात्रा को मापता है।
- ❖ वॉटर फ्लो मीटर का उपयोग उस पाईप में किया जाता है जिसमें पानी का प्रवाह होता है।
- ❖ जिसमें एक टरबाइन लगी होती है जैसे ही पानी वॉटर फ्लो मीटर में प्रवेश करता है तो टरबाइन में लगे सेंसर पानी की गति को मापता है

वॉटर फ्लो मीटर स्थापित करने की विधि:

- ❖ मॉनिटरिंग वेल के लिए वॉटर फ्लो मीटर चयनित ट्यूब/बोर वेल के समान होना चाहिए।
- ❖ वॉटर फ्लो मीटर की स्थापना के लिए चयनित स्थान में ट्यूब/बोर वेल का व्यास और फ्लो पाईप सामान्यतया 3 इंच (76 मिमी) और 4 इंच (100 मिमी) होना चाहिए।

ग्राम पंचायत भूसली में स्थापित वॉटर फलो मीटर:



विडियो देखें <https://youtu.be/kbnDzz0-Hig>

वर्षा जल संचयन : आवश्यक क्यों?

- 1- जल की उपलब्धता बढ़ाने के लिए
- 2- भू - जल भण्डारण में वृद्धि एवं जल स्तर में गिरावट पर नियंत्रण के लिए
- 3- सूखे बोरवेल्स को पुनः उपयोगी बनाने के लिए
- 4- भू जल प्रदूषण को कम करने के लिए
- 5- सड़कों एवं गलियों पर पानी जमाव को रोकने के लिए
- 6- पानी के सतही बहाव में नियंत्रण के लिए
- 7- भूजल की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए
- 8- मृदा कटाव को कम करने के लिए
- 9- गांव की बढ़ती आबादी में जलापूर्ति के लिए
- 10- सतही जल की कमी को पूरी करने के लिए
- 11- निश्चित जगह एवं समय पर भूजल की उपलब्धता बढ़ाने के लिए

ग्राम पंचायत अंधेरा दिलावरा की जल गुणवत्ता ।

पानी में खनिज तत्वों की मानक आवश्यकता		अंधेरा दिलावरा में पानी की मौजूदा गुणवत्ता
PH	6.5-8.5	7.28
EC(μ s/cm)	750	977
TDS(mg/l)	500	635.05
Total Hardness(mg/l)	200	300
Calcium(mg/l)	75	92.98
Magnesium(mg/l)	30	16.52
Sodium(mg/l)	200	66.1
Potassium(mg/l)	40	1.22
Carbonate(mg/l)	200	0
Bicarbonate(mg/l)	200	400
Sulphate(mg/l)	200	52.51
Chloride(mg/l)	250	45
Fluoride(mg/l)	1	0.9
Nitrate(mg/l)	45	5.25
WQI Status		Poor

ग्राम पंचायत शेखपुरा में जल गुणवत्ता जाँच उपकरण:



विडियो देखें <https://youtu.be/pBPv98LG37M>



भूजल में घुले मुख्य तत्वों की अधिकता का मानव शरीर पर दुष्प्रभाव IMPACT OF SOME MAJOR POLLUTANTS IN WATER ON HUMAN BODY



मरकरी-स्नायु तंत्र पर प्रभाव



क्रोमियम-लीवर, स्नायुतंत्र,
अस्थमा तथा त्वचा रोग



कैल्शियम-जोड़ों में कड़ापन



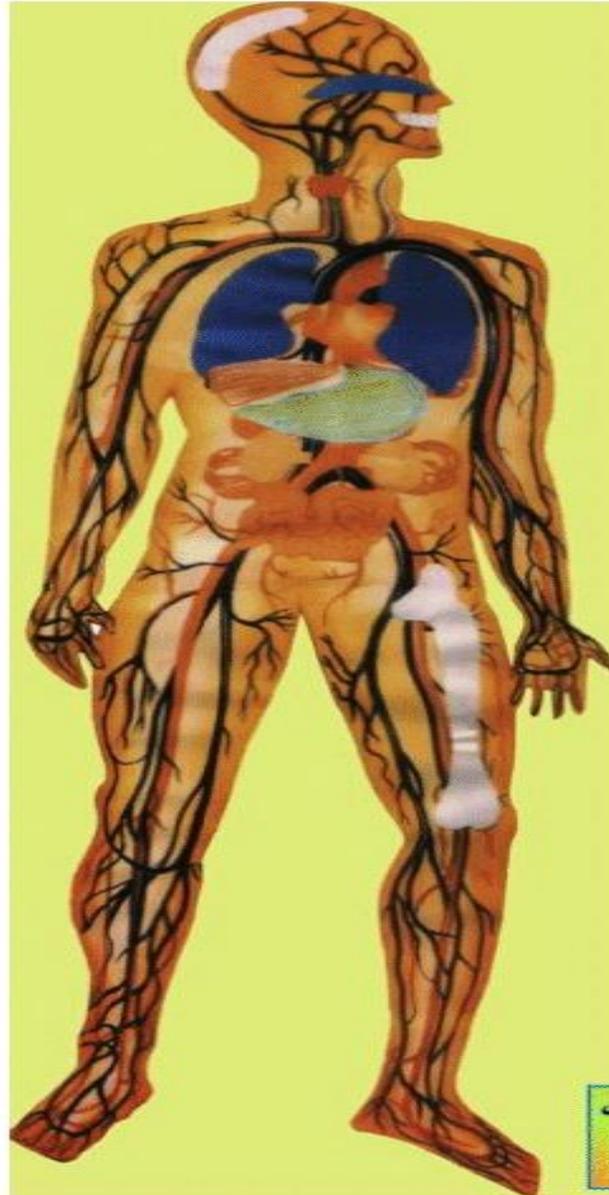
आर्सेनिक-त्वचा रोग, कैंसर



लेड-बच्चों के शारीरिक
व मानसिक विकास में बाधा
वयस्कों में गुर्दे के रोग



भारत सरकार
जल संसाधन मंत्रालय
केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड



फ्लोराइड-दंत क्षरण



क्लोराइड/सोडियम-हृदय, गुर्दा
व रक्त परिसंचरण रोगों से
ग्रसित लोगों को हानिकारक



नाइट्रेट-नवजात शिशुओं में
ब्लू बेबी बीमारी
(मेथेमोग्लोबिनिमिया)



आयरन-आयरन जीवाणु से
आमाशय संबंधी रोग



फ्लोराइड-जोड़ों में अकड़न,
हड्डियों में मुड़ाव

“भूमिजल संरक्षण हो ध्येय हमारा
तभी सुरक्षित भविष्य हमारा”
compiled by : Dr S K Srivastava, Sr Chemist

फसल विविधिकरण के तहत मोटे अनाजों को प्रोत्साहन:

- ❖ जिसकी विशेषता यह है कि इसे कम पानी व सुखा ग्रसत क्षेत्रों में भी आसानी से उगाया जाता है।
- ❖ बाजरा व रागी में कई औषधि गुण होने के कारण आज विकासशील देशों के साथ-साथ विकसित देशों द्वारा भी बाजरा व रागी को अपनाया जाता जा रहा है।
- ❖ हमारे देश में हर साल लगभग 8 मिलियन टन से भी अधिक मात्रा में बाजरा व रागी का 2 मिलियन टन उत्पादन किया जाता है।
- ❖ केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा बाजरा व रागी के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिये किसानों को **RKVY & MPMV** योजना के तहत प्रोत्साहन दिया जा रहा है।
- ❖ बाजरा व रागी के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिये 2023 अन्तराष्ट्रीय मिलेट वर्ष में शामिल किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023



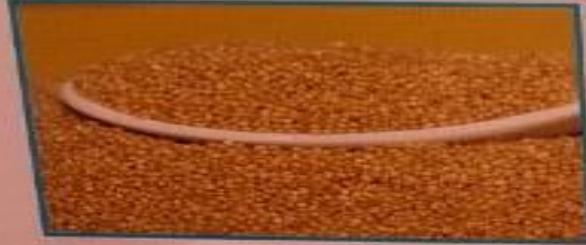
बाजरा



चीना



ज्वार



कंगनी

पोषक अनाज

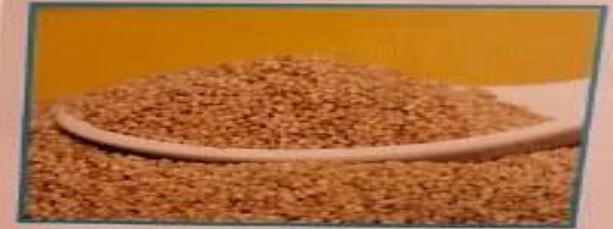
- विटामिन, खनिज, आहार रेशा एवं एंटीऑक्सिडेंट का समृद्ध स्रोत
- कार्यात्मक भोजन एवं पौष्टिक औषधि के रूप में लोकप्रिय
- ग्लूटिन रहित एवं सीलिएक रोगियों के लिए लाभकारी
- तेल अवशोषित करने की क्षमता
- खाने में स्वादिष्ट



कोदो



कुटकी



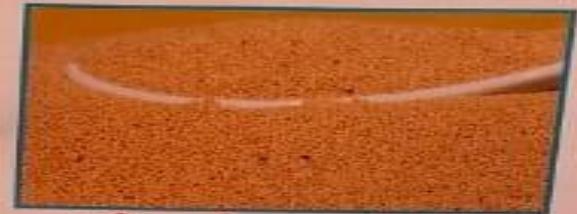
सांवा



समा



मडुआ



चौलाई / राजगिरी



भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल-132001, हरियाणा



मोटे अनाजों की बुवाई व फसल कटने का समय:

फसल	बुवाई का समय	कटने का समय	फसल अवधि
रागी / मंडुवा	जून के अन्तिम सप्ताह से जुलाई प्रथम सप्ताह तक	अक्टूबर	3.5 से 4 माह
बाजरा	मध्य जुलाई	अक्टूबर	3 माह
ज्वार	जून के अन्तिम सप्ताह से जुलाई प्रथम सप्ताह तक	अक्टूबर	3 से 4 माह
कुटकी	जुलाई	सितम्बर	2 से 2.5 माह

मोटे अनाजों की आवश्यकता व लाभ:

- ❖ मोटे अनाज मिट्टी के साथ साथ मानव स्वास्थ्य के लिए भी काफी उपयुक्त होते हैं।
- ❖ औषधि गुणों की प्रचुर मात्रा होने के कारण बाजार की अधिक मांग।
- ❖ धान, गेहूं व गन्ना की फसल के सापेक्ष 5 गुना कम पानी की आवश्यकता।
- ❖ अन्य फसलों की तुलना में कीटनाशी दवाओं का न्यूनतम उपयोग।
- ❖ कम लागत अधिक मुनाफा।
- ❖ अटल भूजल योजना के तहत 1 से 5 एकड़ तक रागी व बाजरा की खेती करने वाले किसानों को बीज निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है।

भारत की मिलेट क्रांति

भारत की 'मिलेट क्रांति (Millet Revolution) मोटे अनाजों के स्वास्थ्य संबंधी और पर्यावरणीय लाभों के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ-साथ पारंपरिक कृषि अभ्यासों को पुनर्जीवित करने तथा छोटे पैमाने के किसानों को समर्थन देने के प्रयासों से प्रेरित है। इसे सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार और सतत कृषि को बढ़ावा देने की देश की दोहरी चुनौतियों के समाधान के रूप में देखा जा रहा है।

मोटे अनाजों में उपलब्ध औषधि गुण व लाभ:

मिलेट्स खाने के फायदे

यह इम्यूनिटी बूस्टर का काम करता है।

- मिलेट्स में कैल्शियम, आयरन, जिंक, फास्फोरस, मैग्नीशियम, पोटैशियम, फाइबर, विटामिन-बी-6 मौजूद होते हैं।

- एक्सपर्ट के अनुसार, एसिडिटी की समस्या में मिलेट्स फायदेमंद साबित हो सकता है।

- इसमें विटामिन-B3 होता है, जो शरीर के मेटाबॉलिज्म को बैलेंस रखता है।



(ब) फसल विविधिकरण के तहत व्यय का तुलनात्मक विवरण :

व्यय विवरण (प्रति एकड़)	फसल		
	धान	बाजरा	मंडुवा / रागी
प्रजाति	सुगन्धा,	आर.एच.बी 177, 299	जेएनआर 852, 1008
अनुमानित जल मांग (लीटर में)	1 करोड़ ली०	वर्षा आधारित	वर्षा आधारित
बीज की मात्रा (किग्रा०)	3	2	4
बीज का मूल्य	1500	300	2000
मजदूरी, खाद, कीटनाशक व अन्य में व्यय	20800	4950	3950
जल पूर्ति में प्रयुक्त विद्युत व्यय (अनुमानित)	3000		
कुल अनुमानित लागत	25300.00	5050	5950

(ब) फसल विविधिकरण के तहत आय का तुलनात्मक विवरण :

आय ववरण (प्रति एकड़)	फसल		
	धान	बाजरा	मंडुवा / रागी
प्रति एकड़ उत्पादन (कु० में)	28	14	12.5
न्यूनतम सर्भथन मूल्य प्रति कु० (रू० में)	2040	2350	3578
विभाग व योजना का नाम	कृषि एवं किसान कल्याण विभाग (एमपीएमवी)		
विभागीय अनुदान (रू० में)	—	7000	7000
कुल अनुमानित आय	57120	32900	44725
कुल अनुमानित लाभ ब-अ	57120	39900	51725
धान	57120-25300= 31820		
बाजरा	39900-5050= 34850		
मंडुवा / रागी	51725-5950= 45775		

रागी / मंडुवा



बाजरा

मोटे अनाजों से निर्मित उत्पाद:





75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



फसल विविधीकरण योजना

मेरा पानी-मेरी विरासत

- सरकार द्वारा धान की फसल की जगह वैकल्पिक फसलों जैसे मक्का/कपास/खरीफ तिलहन/खरीफ दलहन/सब्जियां व फल लगाने के लिए 'मेरा पानी मेरी विरासत' का वर्ष 2022 के लिए भी शुभारंभ किया गया है।
- इस योजना के अंतर्गत राज्य के सभी जिले शामिल किए गए हैं।
- किसान अपने पिछले वर्ष बोए गए धान के क्षेत्र को वैकल्पिक फसलों जैसे मक्का/कपास/खरीफ तिलहन/ खरीफ दलहन/ सब्जियां व फल में बदल सकता है। जो किसान धान की जगह चारा या अपने खेत खाली भी रखते हैं, उन्हें भी इस योजना का लाभ मिलेगा।
- जिन किसानों ने पिछले वर्ष 'मेरा पानी मेरी विरासत' योजना के तहत धान की जगह वैकल्पिक फसलें लगाई थी, वे इस वर्ष भी उसी किल्ला नंबर पर पंजीकरण करके इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।
- फसल विविधिकरण करने वाले किसानों को 7000 रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से वित्तीय सहायता दी जायेगी।
- किसान 'मेरी फसल मेरा ब्यौरा' वेब पोर्टल पर अपने आपको स्वयं, सी.एस.सी. व कृषि विभाग के माध्यम से पंजीकृत करवा सकते हैं।

हरियाणा जल संसाधन प्राधिकरण

जन-स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, हरियाणा

सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, हरियाणा

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा www.prharyana.gov.in | @DiprHaryana

भूजल प्रबंधन में लैंगिक समानता

जेंडर मेनस्ट्रीमिंग कानून और कार्यक्रमों सहित नियोजित नीति कार्रवाई के विभिन्न लिंगों के लोगों के लिए निहितार्थ का आकलन करने की सार्वजनिक नीति अवधारणा है।

मेनस्ट्रीमिंग एक बहुलवादी दृष्टिकोण प्रदान करता है जो विभिन्न लिंगों के बीच विविधता को महत्व देता है।

इसमें महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता को बढ़ावा देने और भेदभाव का मुकाबला करने की दृष्टि से नीतियों, नियामक उपायों और व्यय कार्यक्रमों की तैयारी, डिजाइन, कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन में एक लिंग परिप्रेक्ष्य का एकीकरण शामिल है।

जैसा कि, जेंडर मेनस्ट्रीमिंग पांचवा **SAUSTAINABLE DEVLOPMENT GOAL** भी है



the Gender approach to Water Management



Lessons Learnt Around The Globe

Findings of an electronic conference series convened by the Gender and Water Alliance

January – September 2002

Global Water for Sustainability Program

School of Environment, Arts and Society



Women and Water: The Role of Gender Equality in Defining Sustainability of Water Resources Management

Thursday, March 21, 2013 | 3 p.m. | Rafael Diaz-Balart Hall in the College of Law, MMC

The role women play in the sustainability of water resources management is often overlooked — a reality. FIU's Global Water for Sustainability Program (GLOWS) and the Women's Studies Center are joining forces to explore this issue as a prelude to World Water Day 2013, which was established by the United Nations to advocate for the sustainable management of freshwater resources.



In many societies — especially in the developing world — women often bear the responsibility for household water supply and related tasks, such as food production, cleaning, washing and waste disposal. FIU will bring today's leading thinkers and practitioners together to expose and debate key challenges of integrated water resources management, with an eye towards the role of women in ensuring sustainability.

The panel will include:

- Suzanna Rose**, executive director of the School of Integrated Science and Humanity
- Maria Donoso**, director of the Global Water for Sustainability Program
- Purnima Madhivanan**, associate professor, Robert Stemple College of Public Health & Social Work
- Melissa Luttrell**, assistant professor, College of Law
- Marlene Bastien**, executive director, Fannm Ayisyen Nan Miyami, Inc. (FANM) / Haitian Women of Miami

The event is co-sponsored by the FIU Women's Studies Center, the School of Integrated Science and Humanity and the Office of University Sustainability

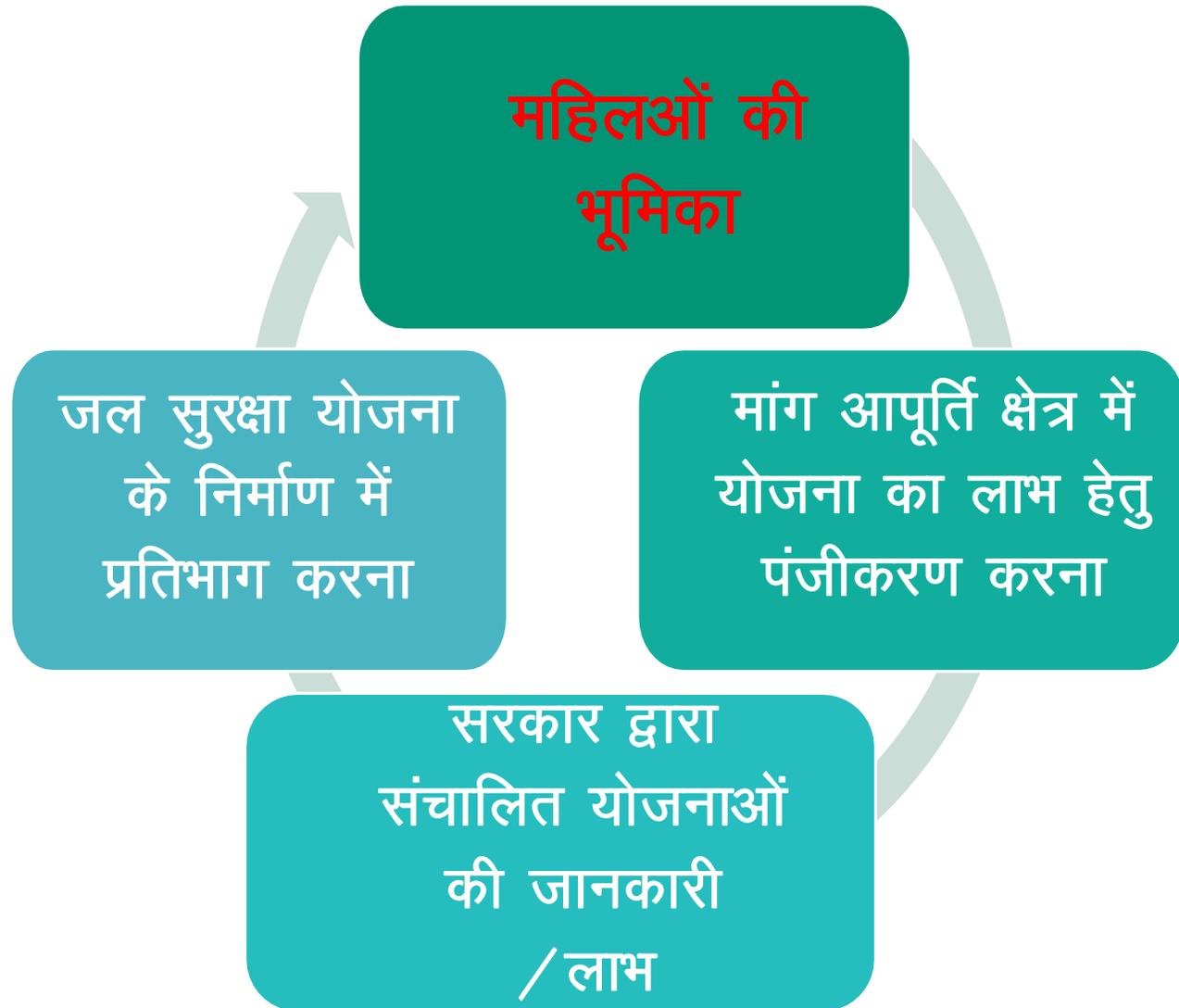
FIU Modesto A. Maidique Campus
11200 SW 8th St., Miami, FL 33199
glows.fiu.edu



FIU Arts & Sciences



➤ महिलाएँ जल की प्रमुख उपयोगकर्ता होती हैं। वे खाना पकाने से लेकर बर्तन व कपड़े धोने, परिवार की अन्य अन्य स्वच्छता सफाई के लिए जल का प्रयोग करती हैं। जल प्रबन्धन में महिलाओं की एक महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। अतः आज के वर्तमान समय में विश्व, राष्ट्र, राज्य व गांव स्तर पर भी महिलाएं भूरा जल प्रबन्धन के साथ-साथ आधुनिक कृषि तकनीकों का उपयोग कर जल संरक्षण में एक सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।



Thank you! 🙏

